

# “जैव टिश्यूकल्चर” केले के पौधे लगाइये और बंपर उत्पादन पाइये !!!

केली महाराष्ट्र के फल उत्पादन में आर्थिक व्यवहारिकता में महत्व की फसल है। भारत देश के फल फसल के क्षेत्र में २०% प्रतिशत हिस्सा केली का है। केली फसल और क्षेत्र में महाराष्ट्र में दो नंबर पर और उपज के बारे में पहले क्रमांक पर है। जलगाँव जिले में ५०,००० हेक्टर क्षेत्र केली फसल की है। यहाँ पूर्वपार कंद से केली लगती थी लेकिन कृषी क्षेत्र में उच्चतम तकनीकी बहोत जोर से उपर आई जैसे टिश्यूकल्चर तंत्रज्ञान उन्ही की एक देन है। जैसे किसान भाई बडी अत्मीयतासे स्विकार के अच्छी उपज ले रहे है।

## टिश्यूकल्चर क्या है?

पौधों का कोई भी भाग, या उसकी पेशी या पेशीयोको समुह यथायोग्य प्रकार के कृत्रीम माध्यम में प्रयोगशाला के, निर्जंतुक, नियंत्रित वातावरण में काच नलिकाओं में पौधों की बढोतरी करने के शास्त्र को टिश्यूकल्चर कहते है।

## पौधे लगाने का समय

टिश्यूकल्चर पौधों का रोपण कम व अधिक तापमान की अवधि छोडकर शेष कालावधी में कभी भी किया जा सकता है। टपक सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होना अति महत्वपूर्ण है।

मृग बहार: माह जून-जुलाई

काँदे बहार: माह अक्तूबर-नवम्बर



## जमीन और पौधों का अन्तर:

भारी, उपजाऊ, पर्याप्त कम्पोस्ट खादवाली अच्छी निथरावाली जमीन केले की फसल के लिए उपयुक्त होती है। पौधों का अन्तर - ६'x६' अथवा ६'x५' अथवा ७'x५' अथवा ७'x३'x५' के अन्तर पर १'x१'x१' के गड्ढे बनाकर पौधे लगावे।

## पौधे लगाने का तरीका

जमीन में अच्छी प्रकार से हल या बकखर चलाने के पश्चात चयनित अन्तर पर गड्ढे में २-३ किलो गोबर की खाद व ५ ग्राम फोरेट मिलावे एवं गड्ढे के बीच में पौधे प्लास्टिक की थैली काट कर लगावे और मिट्टी को अच्छी तरह दबाएँ।

## जल प्रबन्धन

पौधे लगाने के तुरन्त बाद टपक सिंचन प्रणाली से पानी देवे। जमीन में बापसा (हल्की नमी) रहे उतना ही पानी दे। पानी अधिक या कम न हो इसका विशेष ध्यान रखें। पूर्ण पक पौधे को अधिकतम २० से २५ लिटर पानी की आवश्यकता होती है।

## तक्का क्र. - १ प्रति दिन प्रति पौधा सिंचाई का दर

माह	पानी की आवश्यकता प्रति दिन/प्रतिझाड लिटर में		माह	पानी की आवश्यकता प्रति दिन/प्रतिझाड लिटर में	
	(खरीप)	(रब्बी)		(खरीप)	(रब्बी)
जून	५-६	१२-१४	डिसें.	६-८	४-६
जुलै	४-५	१२-१४	जाने.	१०-१२	५-७
ऑगस्ट	५-६	१२-१४	फेब्रु.	१२-१४	५-७
सप्टे.	६-८	१४-१६	मार्च	१६-१८	१०-१२
ऑक्टो.	८-१०	४-६	एप्रिल	१८-२०	१२-१४
नोव्हें.	८-१०	४-६	मे	२०-२२	१२-१४

नोट: पानी की मात्रा मार्गदर्शन के लिए हैं। मिट्टीका प्रकार, हवामान एवं प्रत्यक्ष अनुभव के आधारपर परिवर्तन किया जा सकता है।

## खाद का उपयोग

टपक सिंचन के साथ में पूर्णतः घूलनशील तरल खाद का प्रयोग करें। इससे रासायनिक खाद के उपयोग में बचत होगी तथा टपक सिंचाई संयन्त्र में क्षार जमा नहीं होगा एवं उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

## खत की मात्रा

नत्र-१०५ : स्फुरद-४२ : पोटाश - १४० ग्रॅम प्रति पौधा

कुल - १५२:६०:२०० किलो प्रति/एकड़

पौधों का अन्तर: ६' x ५' (१४५२ पौधों के लिए)

## तक्का क्र.-२

खाद देने का समय पौधा लगाने के बाद	ग्रेड	कुल खाद की मात्रा (किलो)	प्रतिदिन खाद की मात्रा (किलो/एकड़)
पौधे लगाने के बाद १ से ६० दिन	१६:१६:१६ (सु.अ.)+ १३:०:४६ + युरिया	१६२ ६३ ७०	२.१३० १.०३३ ०.७७७
७५ दिन	सुक्ष्म अन्न द्रव्य मैग्नेशियम सल्फेट	१४.५० ३६.३०	१० ग्रॅम प्रति पौधा २५ ग्रॅम प्रति पौधा
६१ से १५० दिन	०:५२:३४ + १३:०:४६ + युरिया	५६ ८२.५ ११७.५	०.६८३ १.३७६ १.६५८
१५१ से ३०० दिन	१३:०:४६ + युरिया	२८२.५ १५०	१.८८४ १.०००

नोट: खाद की उपरोक्त मात्रा मार्गदर्शन के लिए हैं। प्रत्यक्ष अनुभव एवं मिट्टी परिक्षण के आधार पर परिवर्तन किया जा सकता है।

## पारंपारिक रासायनिक खाद का उपयोग:

उपरोक्त तालीका में दर्शाये अनुसार तरल खाद का उपयोग यदि सम्भव न हो, तो बाजार में उपलब्ध पारंपारिक रासायनिक खाद का भी उपयोग किया जा सकता है। पारंपारिक खाद के लिए १५० ग्राम नत्र, ६० ग्रॅम स्फुरद व २०० ग्राम पोटाश प्रति पौधा उपयोग करने की सिफारीश की जाती है। प्रत्येक १,००० पौधों के लिए रासायनिक खाद का प्रयोग निम्नलिखित तालीकानुसार करें।

## तक्का क्र.-३

अवधि	ग्रेड	१००० पौधों के लिए उपयोग करनेवाले खाद की कुल मात्रा	खाद की मात्रा (ग्रॅम/झाड)
पौधा लगाते समय गड्ढे में डाले	सुपर फॉस्फेट + पोर्टश	१२५ किलो १०५ किलो	१२५ ग्रॅम १०५ ग्रॅम
पौधे लगाने के ३० दिन में	युरिया	६२ किलो	६२ ग्रॅम
पौधे लगाने के ७५ दिन में	युरिया + सुपर फॉस्फेट + सुक्ष्म अन्न द्रव्य + मैग्नेशियम सल्फेट	६२ किलो १२५ किलो २५ किलो २५ किलो	६२ ग्रॅम १२५ ग्रॅम २५ ग्रॅम २५ ग्रॅम
पौधे लगाने के १२५ दिन में	युरिया + सुपर फॉस्फेट	६२ किलो १२५ किलो	६२ ग्रॅम १२५ ग्रॅम
पौधे लगाने के १६५ दिन में	युरिया + पोर्टश	६२ किलो १०५ किलो	६२ ग्रॅम १०५ ग्रॅम
पौधे लगाने के २१० दिन में	युरिया	६२ किलो	६२ ग्रॅम
पौधे लगाने के २५५ दिन में	युरिया + पोर्टश	६२ किलो १०५ किलो	६२ ग्रॅम १०५ ग्रॅम
पौधे लगाने के ३०० दिन में	युरिया + पोर्टश	६२ किलो १०५ किलो	६२ ग्रॅम १०५ ग्रॅम

नोट: खाद की उपरोक्त मात्रा मार्गदर्शन के लिए हैं। प्रत्यक्ष अनुभव एवं मिट्टी परिक्षण के आधार पर परिवर्तन किया जा सकता है।

## अन्तर्वर्ती फसलें

केले की फसल में अन्तर्वर्ती फसलें लेना आर्थिक दृष्टिकोण से लाभप्रद होता है। केले की दो पंक्तियों के बीच में अथवा संयुक्त कतार पद्धति में खाली जमीन पर सतह से ऊँचे उठी हुई क्यारियाँ बना कर प्याज लगा सकते हैं। केले के पौधों लगाने के बाद उसकी प्रारंभिक अवस्था में प्याज अन्तर्वर्ती फसल आसानी से ली जा सकती है।

## खरपतबा निवारण

खेत सदैव खरपतवार रहित रखें। डौरा चला कर खेत की मिट्टी भुरभुरी रखें। समय समय पर केले के मुख्य पौधों के साथ उगने वाले छोटे पौधे निकालते रहें। इस सहायक पौधों की वृद्धि न होने दें। झाड़ों पर मिट्टी अच्छे से चढ़ाकर भराव करें अथवा मिट्टी के बजाय वर्मी कम्पोस्ट (जैन वर्मी गोल्ड) का उपयोग किरफायती रहेगा।

## करपा रोग का नियंत्रण

पत्तों पर करपा रोग (दाग) दिखने पर निम्नलिखित उपचार करें।

- 1) रोग ग्रस्त पत्तों को निकाल दें।
- 2) पत्तों पर कोर्बेनडॉझिम १०० ग्रॅम + डायथेन एम ४५ अथवा कॉपर अॅक्सी क्लोराईड २५० ग्रॅम, १०० लिटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। साथ ही औषधी पत्तों पर चिपक कर रहे इसलिए स्टिकर का उपयोग करें।
- 3) उपरोक्त छिड़काव करनेवाली दवा का घोल २५० मि.ली. जमीन में दवा डालते समय स्टिकर का उपयोग करें।

## खोडवा

केले की फसल लगाने के बाद ७ से ६ महिनो में या ४०-५० प्रतिशत फुल आने के

टिश्यूकल्चर केले के पौधों पारंपारिक केले के पौधों से श्रेष्ठ एवं लाभप्रद क्यों व कैसे? (तुलनात्मक अध्यय)

बाद पहले पौधे के पास नया, सशक्त, स्वस्थ एवं तलवार जैसी पत्तोवाला एक सहाय्यक पौधा रखें, बाकी पौधों को काटते रहे। दुसरी फसल (रटून) को पहली फसल जैसे खाद, पानी और सभी प्रकारका व्यवस्थापन नये से करना जरूरी है।

## उत्पादन

टिश्यूकल्चर केले के पौधे सिफारिश के अनुसार लगाने पर तथा जमीन, पानी, खाद आदि की उचित व्यवस्था करने पर केले का उत्पादन पारंपारिक फसल की अपेक्षा दो गुना मिल सकता है। तीन गुना उत्पादन मिलने के उदाहरण भी उपलब्ध हैं।

## टिश्यूकल्चर केले के पौधों की उपलब्धता/बुकींग

जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि., जलगाँव द्वारा अधिक उत्पादन देनेवाली ग्रॅंड नैन जाति के उत्कृष्ट, निरोगी पौधे भरपूर मात्रा में उपलब्ध कराए जा रहे हैं एवं पौधों की बुकींग शुरू है। आनेवाले कल के उज्वल भविष्य के लिए आपने पौधें आज ही बुक कराएँ।



टिश्यूकल्चर केले की फसल **	पारंपारिक केले की फसल
१) पौधें एक ही उम्र, उंचाई एवं जाति के होते हैं।	१) सभी पौधें एक समान बजन के, एक ही जाति के होंगे यह पूर्ण निश्चित नहीं होता है।
२) पौधें निरोगी एवं ओजस्वी होते हैं।	२) पौधें व कन्द कीट एवं रोग मुक्त होंगे यह निश्चित नहीं होता है।
३) टिश्यूकल्चर केले के पौधों में मातृवृक्ष के सभी गुणधर्म एकसमान होते हैं।	३) कन्द से लगाए गए केले के पौधों में सभी के गुणधर्म एक समान नहीं होते हैं।
४) अधिक उत्पादन देनेवाले चयनित मातृवृक्ष होने से अधिक उत्पादन मिलने की निश्चितता रहती है। **	४) कन्द अलग-अलग होने से अधिक उत्पादन की निश्चितता नहीं होती है।
५) पौधा लगाने के बाद से ११ से १२ महिनो में फसल तय्यार हो जाती है। **	५) पौधा लगाने के बाद से १५ से १६ महिनो में फसल तय्यार होती है।
६) फसल की वृद्धि एक समान होती है।	६) फसल की वृद्धि एक समान नहीं होती है।
७) फसल की समय अवधि कम होन से पानी, मजदूरी व अन्य खर्चों में कटौती होती है। **	७) फसल की समय अवधि अधिक होने से पानी, मजदूरी, आदि पर खर्च अधिक होता है।
८) २० से ३० महिनो में एक मुख्य फसल एवं दो पुनर्फसल (रटून) ऐसी तीन फसलें ली जा सकती है। **	८) ३० से ३२ महिनो में एक मुख्य फसल एवं एक पुनर्फसल (रटून) ऐसी सिर्फ दो ही फसलें लेना संभव होता है।
९) अधिक उत्पादन, अधिक आर्थिक लाभा **	९) कम उत्पादन, कम आर्थिक लाभा।

नोट: खेती सर्वस्वी निसर्ग के भरोसे होती है, इसी कारण कंपनी पौधों की बढ़ोतरी, और उत्पादन इसकी कोई गारंटी नहीं ले सकती है।

\*\* शर्तें रहेंगी।

## संपर्क



जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि.

जैन प्लास्टिक पार्क, नं.हा.क्र. ६, पो.बैंग: ७२, जलगाँव - ४२५ ००१, दूरभाष: - ०२५७-२२५००११/२२, फॅक्स: - ०२५७-२२५११२२, ई-मेल: jisl@jains.com

हमारे सभी उत्पादनों की खरीदी, बिक्री एवं सेवा संबंधी अधिक जानकारी के लिए निम्न कार्यालयों से अथवा अधिकृत वितरकों से सम्पर्क करें।

थाना: ०२२-२५४३६६६२; नासीक: ०२०३-२५९२७१८; पूना: ०२०-५४३४८७२; अहमदनगर: ०२४१-२५५०१६६; सांगली: ०२३३-२३३४७७; सोलापूर: ०२१७-२३५७२२०; अमरावती: ०७२१-२६७४७३७; नांदेड: ०२४६२-२७४०४६; औरंगाबाद: ०२४०-२३३५४२; नागपूर: ०७१२-२५४२६१; पंढरपूर: ०२१६-२२२६३१(पीपी); इंदौर: ०७३१-५१३१८६.

